Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-25-27

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 01-10
DOI :-10.71037/gyanvividha.v3i2.04
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. अशोक कुमार सिंह
(शोधार्थी), आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

2. डॉ. पूनम शर्मा
(शोध निर्देशिका), आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

Corresponding Author :

अशोक कुमार सिंह
(शोधार्थी), आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा

शोध सार : भारत एक बहुभाषी, बहु-सांस्कृतिक देश है जहाँ भाषाई विविधता की अभूतपूर्व परंपरा रही है। यहाँ अनुवाद केवल भाषाओं के बीच संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और साहित्य के हस्तांतरण का एक प्रभावी साधन रहा है। भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा न केवल प्राचीन ग्रंथों के रूपांतरण में दिखती है, बल्कि आधुनिक साहित्य, प्रशासनिक संप्रेषण, तकनीकी अनुवाद और बहुभाषिक शिक्षा व्यवस्था में भी इसका व्यापक उपयोग देखा जाता है। अनुवाद के माध्यम से भारत की भाषाएं न केवल एक-दूसरे के करीब आईं, बल्कि उन्होंने वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति भी दर्ज कराई।

बीज शब्द : बहु-सांस्कृतिक देश, प्रशासनिक संप्रेषण, बहुभाषिक शिक्षा व्यवस्था, अनुवाद की परंपरा इत्यादि।

मूल आलेख : अनुवाद का सामान्य अर्थ है किसी भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि मूल आशय सुरक्षित रहे। परंतु भाषा-विज्ञान और अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में यह प्रक्रिया कहीं अधिक जटिल मानी जाती है। अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह अर्थ, संदर्भ और सांस्कृतिक संकेतों का पुनर्निर्माण है। अनुवादक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा का पाठक उसी भाव और अर्थ को समझ सके जो मूल भाषा में निहित है।

अनुवाद के दो प्रमुख दृष्टिकोण प्रचलित हैं:

1. शाब्दिक अनुवाद (Literal Translation)
2. भावानुवाद (Sense Translation)

शाब्दिक अनुवाद में शब्दों की संरचना को अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि भावानुवाद में मूल विचार और भाव को प्राथमिकता दी जाती है। आधुनिक अनुवाद अध्ययन में दोनों के बीच संतुलन को आवश्यक माना जाता है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक अनुकूलन (Cultural Adaptation) भी अनुवाद की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। कई बार किसी संस्कृति विशेष के शब्दों या मुहावरों को दूसरी भाषा में उसी रूप में प्रस्तुत करना संभव नहीं होता। ऐसे में अनुवादक को समतुल्य अभिव्यक्ति खोजनी पड़ती है।

संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा होती है। भाषा के माध्यम से ही किसी समाज की संस्कृति, परंपराएँ और जीवन दृष्टि अभिव्यक्त होती हैं। जब किसी भाषा की साहित्यिक कृतियों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद होता है, तब वह संस्कृति व्यापक समाज तक पहुँचती है। साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से विभिन्न देशों के लोग एक दूसरे की जीवन शैली, सामाजिक संरचना और भावनात्मक संसार से परिचित होते हैं। इससे सांस्कृतिक संवाद और पारस्परिक समझ विकसित होती है। उदाहरण के लिए भारतीय महाकाव्यों, उपनिषदों और साहित्यिक कृतियों का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसी प्रकार विश्व साहित्य की महान कृतियाँ भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। इस प्रकार अनुवाद सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित रखते हुए वैश्विक सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करता है।

अनुवाद सामाजिक और लोकतांत्रिक विकास की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। जब विभिन्न समाजों के लोग एक दूसरे के विचारों और अनुभवों से परिचित होते हैं तो उनके दृष्टिकोण में विस्तार आता है। लोकतंत्र, मानवाधिकार, समानता और सामाजिक न्याय जैसे विचार विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से ही व्यापक समाज तक पहुँचे। इन विचारों ने कई देशों में सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित किया।

भारत में अनुवाद की परंपरा वेदों और उपनिषदों के काल से ही देखी जाती है। वेदों को पहले मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित किया गया, किंतु जब ज्ञान का विस्तार हुआ तो इन्हें पालि, प्राकृत, तमिल जैसी भाषाओं में लाया गया ताकि जनसामान्य तक पहुँचा सके। बौद्ध धर्म ने जब भारत की सीमाओं को पार किया, तब पालि और संस्कृत ग्रंथों का चीनी, तिब्बती और सिंहली भाषाओं में अनुवाद किया गया। उदाहरण के रूप में त्रिपिटक का तिब्बती और चीनी अनुवाद उल्लेखनीय है। जैन साहित्य भी शौरसेनी, अर्धमागधी और अपभ्रंश में अनुवादित हुआ। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत में तमिल और तेलुगु साहित्य में संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

भक्ति आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषाओं में धार्मिक साहित्य की रचना को प्रोत्साहित किया। यह अनुवाद मात्र भाषांतरण नहीं था, बल्कि लोक संस्कृति के अनुसार सामग्री का रूपांतरण था। तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस संस्कृत रामायण का अवधी भाषा में भावानुवाद है। दक्षिण भारत में कंबन रामायण तमिल भाषा में रामकथा का अनुवाद है। कबीर, सूरदास, मीराबाई, नामदेव जैसे संतों ने धार्मिक विचारों को स्थानीय भाषाओं में प्रस्तुत कर जनमानस को जोड़ा। इनकी वाणी का बाद में अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। मुगलकाल में अकबर के शासनकाल में महाभारत का फारसी में अनुवाद "रज़्मनामा" के रूप में किया गया, जो एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक कृति है।

ब्रिटिश काल में अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के आगमन से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की नई लहर आई। कानून, प्रशासन, विज्ञान और साहित्य से संबंधित अंग्रेज़ी ग्रंथों का हिंदी, बांग्ला, तमिल, मराठी आदि में अनुवाद हुआ। राजा राममोहन राय ने उपनिषदों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया ताकि पश्चिम में भारतीय दर्शन को प्रस्तुत किया जा सके। विद्यासागर ने संस्कृत ग्रंथों को बांग्ला में सरल भाषा में अनूदित किया। बाइबिल का अनुवाद मिशनरियों द्वारा तमिल, बांग्ला, असमिया, उर्दू आदि भाषाओं में किया गया। यह अनुवाद कार्य भाषा के मानकीकरण और मुद्रण तकनीक के प्रसार में सहायक रहा।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल हैं। संविधान की धारा 343 और 344 के अंतर्गत राजभाषा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद का विशेष महत्व है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो (CTB), राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (NTM) और राज्य भाषा संस्थान इस दिशा में सक्रिय हैं। साहित्य अकादमी द्वारा विभिन्न भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करवाया जाता है। हर वर्ष अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। भारतीय न्यायपालिका में उच्चतम न्यायालय के निर्णयों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद हाल ही में प्रारंभ हुआ है, जिससे न्याय तक पहुँच सुगम हो रही है।

अनुवाद कार्य केवल भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारतीय भाषाओं के मध्य भी अनुवाद की सशक्त परंपरा रही है। टैगोर की 'गोरा', 'घरे-बाइरे' का हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवाद, प्रेमचंद की कहानियों का बांग्ला, मराठी, उर्दू आदि में अनुवाद, उर्दू साहित्य का पंजाबी में अनुवाद इसके प्रमाण हैं।

स्रोत भाषा	**लक्ष्य भाषा**	**अनूदित कृति**	**अनुवादक**
संस्कृत	तमिल	महाभारत	कंबन
बांग्ला	हिंदी	घरे-बाइरे	स्वयं टैगोर

हिंदी	अंग्रेज़ी	गोदान	रूप नारायण सिन्हा
उड़िया	हिंदी	सारला महाभारत	विभिन्न अनुवादक

आज अनुवाद का दायरा साहित्य से आगे बढ़कर तकनीकी, व्यावसायिक और डिजिटल क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग आधारित टूल्स जैसे गूगल ट्रांसलेट, भाषिण आदि ने अनुवाद को सरल और तेज़ बना दिया है। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, ई-गवर्नेंस पोर्टल्स, सरकारी योजनाओं की जानकारी अब क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही हैं। OTT प्लेटफ़ॉर्म्स जैसे Netflix, Amazon Prime पर विभिन्न भारतीय भाषाओं की फिल्में और वेबसीरीज़ सबटाइटलिंग और डबिंग के माध्यम से सभी भाषा-भाषियों तक पहुँच रही हैं।

भाषिक विविधता और क्षेत्रीय व्याकरणिक अंतर अनुवाद को कठिन बनाते हैं। उदाहरण के लिए, एक ही शब्द का विभिन्न भाषाओं में अर्थ और प्रयोग अलग हो सकता है। लोकोक्तियाँ, मुहावरे और सांस्कृतिक प्रतीक अनुवाद में अर्थ का ह्रास कर सकते हैं। तकनीकी विषयों में सटीक शब्दावली का अभाव, मानकीकरण की कमी, और प्रशिक्षित अनुवादकों की अल्पता भी चुनौतियाँ हैं। अनुवाद में भाव, शैली और मूल भावना को सुरक्षित रखना आज भी एक जटिल कार्य है।

निष्कर्ष : भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा केवल भाषाओं के बीच सेतु नहीं, बल्कि वह राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक एकता और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम रही है। आज जब विश्व बहुभाषिकता की ओर बढ़ रहा है, भारत की यह अनुवाद परंपरा अन्य देशों के लिए अनुकरणीय बन सकती है। यह ज़रूरी है कि हम अनुवादकों को उचित प्रशिक्षण, सम्मान और तकनीकी सहायता प्रदान करें ताकि यह परंपरा और समृद्ध हो सके।

आज अनुवाद का महत्व सर्व विदित है। नई शिक्षा नीति, 2020 में भी अनुवाद पर काफी ज़ोर दिया गया है जिसमें भारतीय अनुवाद एवं व्याख्या संस्थान की स्थापना करने का भी सुझाव दिया गया है। यह पहली बार है जब किसी समिति ने इस प्रकार के संस्थान की स्थापना पर ज़ोर दिया है। इससे पहले कभी भी अनुवाद के महत्व पर ज़ोर नहीं दिया गया और ना ही उसे विश्वविद्यालयों में नियमित विषय के तौर पर मान्यता दी गई। आज जब पूरा विश्व सिमट कर एक गाँव का रूप ले चुका है तब इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। एक-दूसरे की भाषा, साहित्य, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा को जानने के लिए अनुवाद सबसे जरूरी है। भारत स्वयं में अपने अंदर इतनी विविधता समेटे हुए है कि यहाँ अनुवाद को एक पूर्ण विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. गोविंद, रंजीत. भारतीय भाषाओं का विकास एवं अनुवाद परंपरा, साहित्य भवन, 2015.
2. शास्त्री, के.के. भारतीय अनुवाद परंपरा, राजकमल प्रकाशन, 2001.
3. Tagore, Rabindranath. Translations of Tagore, Sahitya Akademi.
4. http://www.ntm.org.in.
5. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो – वार्षिक रिपोर्ट.
6. साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार सूची.
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार.

•